Title: Need to review the decision to involve the Arthur Andersen Company for promotion of Khadi and village industry.

श्री रामजीलाल ्सुमन (फिरोजा्बाद) : ्सभापति महोद्य, खादी एवं ग्रामोद्योग की द्शा को ्बेहतर ्बनाने हेतु ्भारत ्सरकार ने एक ्विदेशी कम्पनी आर्थर एंडर्सन के ्साथ करार कि्या है, जो चिन्ता का वि्िय है। खादी ्सिर्फ कप्ड़ा ही नहीं, एक ्विचार है। रा्ट्रीय आन्दोलन में खादी ्स्वदेशी एवं ्स्वा्वलम््बन का प्रतीक रही है। आज जो खादी एवं ग्रामोद्योग की ्स्थिति है, उ्सका प्रमुख कारण ्सरकार का इ्सकी ओर वि्शे ध्यान न देना है। परिणाम्स्वरूप, खादी एवं ग्रामोद्योग में लगे 57 लाख कारीगर आज ्भुखमरी की ्स्थिति में हैं। ्विदेशी कम्पनी के हाथों ्भारत में खादी का ्भवि्य तला्शने की ्सम्भा्वनाएं एक प्रकार ्से गांधी ्विचार की हत्या है। चूंकि खादी एवं ग्रामोद्योग की प्रगति का का्र्य काफी लम््बी अ्वधि तक चलेगा, इ्सलिए आ्शा है कि आर्थर एंडर्सन फर्म करो्ड़ों रुप्ये ्भारत ्से कमाएगी। फिलहाल खादी एवं ग्रामोद्योग का कारो्बार हाथों पर नि्र्भर है। इ्स ्सम्भा्वना ्से इंकार नहीं कि्या जा ्सकता कि ्यह ्विदेशी कम्पनी ्बजा्य हाथों के म्शीनों को तरजीह देने की ्बात कह ्सकती है, जि्स्से खादी एवं ग्रामोद्योग प्र्भा्वित होंगे।

मेरा केन्द्र ्सरकार ्से अनुरोध है कि इ्स निर्ण्य पर पुनर््विचार करे।